भारत के विदेश संबंध

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ

प्रश्न 1 (आसान). जब भारत आज़ाद हुआ, तब दुनिया में कौन सा बड़ा युद्ध अभी-अभी खत्म हुआ था?
उत्तर – द्वितीय विश्व युद्ध।

प्रश्न 2 (आसान). शीत युद्ध के दौरान दुनिया कितने प्रमुख गुटों में बँट रही थी?
उत्तर – दो गुटों में।

प्रश्न 3 (मध्यम). आज़ादी के समय नए देशों के सामने मुख्य घरेलू चुनौतियाँ क्या थीं?
उत्तर – लोकतंत्र स्थापित करना और जनता की गरीबी व आर्थिक विकास की समस्याएँ।

प्रश्न 4 (कठिन). भारत ने इन अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों में अपनी विदेश नीति का मुख्य लक्ष्य क्या तय किया होगा?
उत्तर – भारत ने अपनी संप्रभुता (आज़ादी) बनाए रखना, शांति स्थापित करना, और आर्थिक विकास करना मुख्य लक्ष्य तय किया।

» गुटनिरपेक्षता की नीति: सिद्धांत और उद्देश्य

प्रश्न 5 (आसान). गुटनिरपेक्षता का मुख्य सिद्धांत क्या है?
उत्तर – किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होना और अपनी स्वतंत्र विदेश नीति बनाए रखना।

प्रश्न 6 (आसान). भारत ने किस ऐतिहासिक संघर्ष के बाद गुटनिरपेक्षता को अपनाया?
उत्तर – उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष और दूसरे विश्व युद्ध के बाद।

प्रश्न 7 (मध्यम). गुटनिरपेक्षता की नीति के किन्हीं दो उद्देश्यों का उल्लेख करें।
उत्तर – अपनी संप्रभुता को बचाए रखना और तेज़ रफ़्तार से आर्थिक विकास करना।

प्रश्न 8 (कठिन). भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने से संबंधित है, और यह गुटनिरपेक्षता से कैसे जुड़ा है?
उत्तर – अनुच्छेद 51. यह नीति-निर्देशक सिद्धांत राज्य को अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को बढ़ावा देने, राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत संबंध बनाए रखने और अंतर्राष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता से सुलझाने का निर्देश देता है, जो गुटनिरपेक्षता के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के दर्शन के अनुरूप है।

» जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति में भूमिका

प्रश्न 9 (आसान). नेहरू जी प्रधानमंत्री के साथ-साथ और कौन से महत्वपूर्ण पद पर थे?
उत्तर – विदेश मंत्री

प्रश्न 10 (आसान). नेहरू जी ने भारत की विदेश नीति का निर्माण और क्रियान्वयन कब से कब तक किया?
उत्तर – 1946 से 1964 तक

प्रश्न 11 (मध्यम). नेहरू जी अपनी विदेश नीति के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए कौन सी मुख्य नीति अपनाना चाहते थे?
उत्तर – गुटनिरपेक्षता की नीति

प्रश्न 12 (कठिन). नेहरू की विदेश नीति के तीन बड़े उद्देश्यों को संक्षेप में समझाइए.
उत्तर – नेहरू की विदेश नीति के तीन उद्देश्य थे: देश की संप्रभुता (आज़ादी) को बनाए रखना; देश की क्षेत्रीय अखंडता (सीमाओं की सुरक्षा) को बनाए रखना; और देश का तेज़ी से आर्थिक विकास करना ताकि वह मज़बूत बन सके.

» दो खेमों से दूरी और एफ़्रो-एशियाई एकता

प्रश्न 13 (आसान). भारत ने शीत युद्ध में कौन से दो खेमों से दूरी बनाई रखी?
उत्तर – अमेरिका और सोवियत संघ के खेमों से.

प्रश्न 14 (आसान). गुटनिरपेक्षता का मतलब तटस्थता (neutrality) था या स्वतंत्र नीति?
उत्तर – गुटनिरपेक्षता का मतलब स्वतंत्र नीति था, तटस्थता नहीं.

प्रश्न 15 (मध्यम). गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाने से भारत को क्या लाभ हुआ?
उत्तर – भारत अपनी संप्रभुता बनाए रख सका, स्वतंत्र निर्णय ले सका और दोनों महाशक्तियों से सहायता प्राप्त कर सका.

प्रश्न 16 (कठिन). एफ़्रो-एशियाई एकता को बढ़ावा देने में भारत की क्या भूमिका थी और इसने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव कैसे रखी?
उत्तर – भारत ने एशिया और अफ्रीका के नए आज़ाद हुए देशों के साथ संपर्क बढ़ाया, 1947 में एशियाई संबंध सम्मेलन और 1949 में इंडोनेशिया की आज़ादी के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया. 1955 का बांडुंग सम्मेलन इसी एकता का चरम बिंदु था, जहाँ गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव पड़ी.

» चीन के साथ शांति और संघर्ष (पंचशील और 1962 का युद्ध)

प्रश्न 17 (आसान). पंचशील समझौते पर किन दो देशों ने हस्ताक्षर किए थे?
उत्तर – भारत और चीन

प्रश्न 18 (आसान). दलाई लामा ने भारत में कब शरण ली थी?
उत्तर – 1959 में

प्रश्न 19 (मध्यम). भारत-चीन युद्ध के बाद भारत की आंतरिक राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा था?
उत्तर – रक्षा मंत्री वी.के. कृष्ण मेनन को इस्तीफा देना पड़ा, नेहरू की छवि धूमिल हुई और सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया.

प्रश्न 20 (कठिन). 1962 के भारत-चीन युद्ध के पीछे तिब्बत मुद्दा क्यों इतना महत्वपूर्ण था, समझाइए.
उत्तर – तिब्बत भारत और चीन के बीच एक बफर स्टेट था. चीन ने 1950 में इस पर कब्ज़ा कर लिया. जब दलाई लामा ने 1959 में भारत में शरण मांगी, तो चीन ने इसे भारत का अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप माना, जिससे रिश्तों में और ज़्यादा कड़वाहट आ गई और यह युद्ध के प्रमुख कारणों में से एक बन गया.

» पाकिस्तान के साथ युद्ध और शांति (1947, 1965, 1971)

प्रश्न 21 (आसान). सिंधु नदी जल संधि पर कब और किसके बीच हस्ताक्षर हुए थे?
उत्तर – 1960 में भारत के प्रधानमंत्री नेहरू और पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खान के बीच.

प्रश्न 22 (आसान). 1965 के युद्ध के बाद कौन सा समझौता हुआ?
उत्तर – ताशकंद समझौता.

प्रश्न 23 (मध्यम). 1971 के युद्ध में कौन सा नया देश बना और किस भारतीय नेता की लोकप्रियता बढ़ी?
उत्तर – बांग्लादेश नया देश बना और इंदिरा गांधी की लोकप्रियता में बहुत बढ़ोतरी हुई.

प्रश्न 24 (कठिन). भारत और पाकिस्तान के बीच कश्मीर विवाद कब से चला आ रहा है और इसकी शुरुआत कैसे हुई?
उत्तर – कश्मीर विवाद भारत-पाकिस्तान बंटवारे (1947) के तुरंत बाद शुरू हुआ, जब दोनों देशों की सेनाओं के बीच संघर्ष छिड़ गया और मामला संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुँच गया.

» करगिल संघर्ष (1999)

प्रश्न 25 (आसान). करगिल संघर्ष किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1999

प्रश्न 26 (आसान). करगिल संघर्ष में भारत द्वारा चलाए गए ऑपरेशन का क्या नाम था?
उत्तर – ऑपरेशन विजय

प्रश्न 27 (मध्यम). करगिल संघर्ष में अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने भारत-पाकिस्तान संबंधों में क्या चिंता व्यक्त की थी?
उत्तर – अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को डर था कि परमाणु हथियारों से लैस दो देशों के बीच यह संघर्ष कहीं परमाणु युद्ध में न बदल जाए.

प्रश्न 28 (कठिन). करगिल संघर्ष का भारत की घरेलू राजनीति और सैन्य पराक्रम पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर – करगिल संघर्ष में निर्णायक जीत से भारत में उत्साह की लहर दौड़ गई, अधिकांश भारतीयों ने इसे गौरव की घड़ी माना और भारत के सैन्य पराक्रम को प्रबल समझा. इससे देश में आत्मविश्वास बढ़ा.

» भारत की परमाणु नीति का विकास

प्रश्न 29 (आसान). भारत में परमाणु कार्यक्रम की शुरुआत किस दशक में हुई?
उत्तर – 1940 के दशक में।

प्रश्न 30 (आसान). भारत का पहला परमाणु परीक्षण किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1974 में।

प्रश्न 31 (मध्यम). भारत की परमाणु नीति का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत क्या है?
उत्तर – 'पहले प्रयोग नहीं' (No First Use) का सिद्धांत।

प्रश्न 32 (कठिन). परमाणु अप्रसार संधि (NPT) के प्रति भारत के विरोध का मुख्य कारण क्या था?
उत्तर – भारत इसे भेदभावपूर्ण मानता था क्योंकि यह कुछ देशों को परमाणु हथियार रखने की अनुमति देता था और दूसरों पर प्रतिबंध लगाता था, जिससे परमाणु संपन्न देशों का एकाधिकार बना रहता।

» विश्व राजनीति के बदलते समीकरण और भारत की विदेश नीति

प्रश्न 33 (आसान). 1977 के बाद कौन सी पहली गैर-कांग्रेसी सरकार बनी जिसने विदेश नीति में बदलाव की बात कही?
उत्तर – जनता पार्टी की सरकार

प्रश्न 34 (आसान). सोवियत संघ का विघटन किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1991

प्रश्न 35 (मध्यम). 1990 के बाद से भारत की विदेश नीति में किस तरह के हितों को अधिक महत्व मिलने लगा?
उत्तर – आर्थिक हितों को

प्रश्न 36 (कठिन). जनता पार्टी सरकार ने 'सच्ची गुटनिरपेक्ष नीति' से क्या आशय बताया था?
उत्तर – इसका आशय यह था कि विदेश नीति में सोवियत संघ के प्रति आए झुकाव को खत्म किया जाएगा।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. भारत की विदेश नीति के निर्माण को प्रभावित करने वाले किन्हीं दो अंतर्राष्ट्रीय संदर्भों का उल्लेख कीजिए।

› पहला अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ: दूसरा विश्व युद्ध अभी-अभी खत्म हुआ था। इस युद्ध की वजह से पूरी दुनिया में बहुत तबाही हुई थी और सभी देश शांति तथा पुनर्निर्माण की बात कर रहे थे।

› दूसरा अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ: शीत युद्ध की शुरुआत हो रही थी। दुनिया दो बड़े गुटों में बंट रही थी - एक अमेरिका के नेतृत्व में और दूसरा सोवियत संघ के नेतृत्व में। भारत को इन दोनों से समान दूरी बनाकर चलना था।

उत्तर – भारत की विदेश नीति को प्रभावित करने वाले दो अंतर्राष्ट्रीय संदर्भ थे: द्वितीय विश्व युद्ध की तबाही और पुनर्निर्माण की ज़रूरत, और शीत युद्ध की शुरुआत व विश्व का दो गुटों में बँटना।

उदाहरण 2. शीत युद्ध के दौरान भारत ने गुटनिरपेक्षता की नीति क्यों अपनाई?

› पहला कदम: शीत युद्ध के समय दुनिया दो बड़े गुटों में बँटी थी - अमेरिका और सोवियत संघ.

› दूसरा कदम: अगर भारत किसी एक गुट में शामिल होता, तो उसे अपनी आज़ादी और विदेश नीति में समझौता करना पड़ता.

› तीसरा कदम: गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाकर भारत ने अपनी संप्रभुता (खुद के फैसले लेने की शक्ति) बनाए रखी.

› चौथा कदम: भारत ने दोनों गुटों से मदद लेकर अपने आर्थिक विकास पर ध्यान दिया.

› पांचवां कदम: इसने भारत को वैश्विक मंच पर एक स्वतंत्र और प्रभावशाली आवाज़ बनने में मदद की, ताकि वह अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में योगदान दे सके.

उत्तर – भारत ने शीत युद्ध के दौरान अपनी संप्रभुता बनाए रखने, आर्थिक विकास करने और अंतर्राष्ट्रीय शांति में भूमिका निभाने के लिए गुटनिरपेक्षता की नीति अपनाई, ताकि वह किसी गुट के दबाव में न आए.

उदाहरण 3. जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति के कोई तीन प्रमुख उद्देश्य बताइए।

› पहला उद्देश्य था 'कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता को बचाए रखना'. इसका मतलब था कि जो आज़ादी हमने इतनी मुश्किल से पाई थी, उसे किसी भी बाहरी शक्ति के दबाव से बचाकर रखना.

› दूसरा उद्देश्य था 'क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना'. यानी, हमारे देश की सीमाओं को सुरक्षित रखना, कोई भी हमारे देश के हिस्से पर कब्ज़ा न कर पाए.

› और तीसरा उद्देश्य था 'तेज़ रफ़्तार से आर्थिक विकास करना'. नेहरू जी चाहते थे कि भारत तेज़ी से तरक्की करे और गरीबी दूर हो, ताकि देश मज़बूत बन सके.

› इन तीनों उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए नेहरू जी ने 'गुटनिरपेक्षता' की नीति अपनाई, जिसका मतलब था कि किसी भी बड़े शक्ति गुट में शामिल न होना, बल्कि एक स्वतंत्र रास्ता चुनना.

उत्तर – जवाहरलाल नेहरू की विदेश नीति के तीन प्रमुख उद्देश्य थे: 1. कठिन संघर्ष से प्राप्त संप्रभुता को बचाए रखना, 2. क्षेत्रीय अखंडता को बनाए रखना, और 3. तेज़ रफ़्तार से आर्थिक विकास करना।

उदाहरण 4. भारत ने शीत युद्ध के दौरान किन दो प्रमुख खेमों से दूरी बनाई रखी और गुटनिरपेक्षता का क्या महत्व था?

› पहला खेमा: अमेरिका के नेतृत्व वाला सैन्य गठबंधन (NATO).

› दूसरा खेमा: सोवियत संघ के नेतृत्व वाला सैन्य गठबंधन (वारसा पैक्ट).

› गुटनिरपेक्षता का महत्व: भारत अपनी नव-प्राप्त संप्रभुता को बनाए रखना चाहता था और अंतरराष्ट्रीय मामलों में स्वतंत्र निर्णय लेना चाहता था.

› यह नीति भारत को दोनों महाशक्तियों से आर्थिक सहायता और तकनीकी समर्थन लेने की अनुमति भी देती थी, बिना उनकी शर्तों के अधीन हुए.

उत्तर – भारत ने अमेरिका और सोवियत संघ के खेमों से दूरी बनाए रखी, ताकि वह अपनी संप्रभुता, स्वतंत्र विदेश नीति और विकास के लक्ष्यों को बिना किसी बाहरी दबाव के प्राप्त कर सके.

उदाहरण 5. 1962 के भारत-चीन युद्ध के मुख्य कारण और भारत पर इसके क्या परिणाम हुए?

› सबसे पहले, हमें यह समझना होगा कि भारत और चीन के बीच शुरुआती रिश्ते बहुत दोस्ताना थे. भारत ने चीन की कम्युनिस्ट सरकार को तुरंत मान्यता दे दी थी.

› 1954 में दोनों देशों के बीच 'पंचशील' समझौता हुआ, जिसके तहत शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के पांच सिद्धांत तय हुए. यह दोस्ती का सुनहरा दौर था.

› लेकिन रिश्तों में खटास आनी शुरू हुई तिब्बत के मुद्दे से. 1950 में चीन ने तिब्बत पर कब्ज़ा कर लिया. भारत ने शुरू में इसका खुला विरोध नहीं किया, लेकिन जब चीन ने तिब्बती संस्कृति को दबाना शुरू किया, तो भारत को चिंता हुई.

› 1959 में तिब्बत के धार्मिक नेता दलाई लामा ने चीन से भागकर भारत में शरण मांगी, और भारत ने उन्हें शरण दे दी. चीन ने इसे अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप माना.

› दूसरा बड़ा कारण था सीमा विवाद. चीन ने भारत की लद्दाख और अरुणाचल प्रदेश (जो तब NEFA कहलाता था) के कुछ हिस्सों पर अपना दावा किया, और अक्साई-चीन में सड़क बना ली. भारत ने इन दावों को ठुकरा दिया.

› इन दो बड़े कारणों - तिब्बत और सीमा विवाद - के चलते 1962 में चीन ने अचानक भारत पर हमला कर दिया. भारतीय सेना इसके लिए तैयार नहीं थी.

› युद्ध के परिणामों की बात करें तो, भारत को सैन्य रूप से हार का सामना करना पड़ा. हमारी अंतर्राष्ट्रीय छवि को धक्का लगा, और हमें अमेरिका व ब्रिटेन से मदद मांगनी पड़ी.

› घरेलू राजनीति पर भी इसका गहरा असर पड़ा. तत्कालीन रक्षा मंत्री वी.के. कृष्ण मेनन को इस्तीफा देना पड़ा. पंडित नेहरू की छवि को भी चोट पहुँची, क्योंकि उनकी 'हिंदी-चीनी भाई-भाई' की नीति गलत साबित हुई. पहली बार उनकी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाया गया. इस युद्ध ने भारत की सुरक्षा नीति और सैन्य तैयारी पर नए सिरे से सोचने को मजबूर किया.

उत्तर – 1962 के भारत-चीन युद्ध के मुख्य कारण तिब्बत पर चीन का कब्ज़ा और दलाई लामा को भारत द्वारा शरण देना, साथ ही भारत-चीन सीमा विवाद (विशेषकर अक्साई-चीन और अरुणाचल प्रदेश पर दावे) थे. इसके परिणामों में भारत की सैन्य हार, अंतर्राष्ट्रीय छवि को नुकसान, नेहरू की छवि पर असर, रक्षा मंत्री का इस्तीफा और भारतीय राजनीति में बड़े बदलाव शामिल थे, जिसने देश को अपनी सुरक्षा नीति पर गंभीर आत्मचिंतन के लिए प्रेरित किया.

उदाहरण 6. भारत और पाकिस्तान के बीच 1971 के युद्ध का मुख्य कारण क्या था और इसका क्या परिणाम हुआ?

› पहला कदम है युद्ध के कारण को समझना: 1970 के चुनाव के बाद पूर्वी पाकिस्तान (जो अब बांग्लादेश है) में अवामी लीग की जीत हुई थी, जिसे पश्चिमी पाकिस्तान स्वीकार नहीं कर रहा था. पश्चिमी पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान की जनता पर ज़ुल्म ढाने शुरू कर दिए, जिससे लाखों शरणार्थी भारत आ गए.

› दूसरा कदम है भारत की प्रतिक्रिया: भारत ने पूर्वी पाकिस्तान के मुक्ति संग्राम का समर्थन किया और उन्हें सहायता दी, क्योंकि शरणार्थियों का बोझ भारत पर बढ़ता जा रहा था.

› तीसरा कदम है युद्ध की शुरुआत: दिसंबर 1971 में पाकिस्तान ने भारत पर हमला किया, जिसके जवाब में भारत ने पूर्वी और पश्चिमी दोनों मोर्चों पर कार्रवाई की. भारतीय सेना ने ढाका को घेर लिया.

› चौथा कदम है युद्ध का परिणाम: सिर्फ़ 10 दिनों में पाकिस्तानी सेना ने 90,000 सैनिकों के साथ आत्मसमर्पण कर दिया. इससे बांग्लादेश एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उभरा, और भारत की एक बड़ी कूटनीतिक और सैन्य जीत हुई.

उत्तर – 1971 के युद्ध का मुख्य कारण पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) में पाकिस्तान सरकार द्वारा बंगाली जनता पर किया गया अत्याचार और अवामी लीग की जीत को न मानना था. इसका परिणाम बांग्लादेश का एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में उदय हुआ और भारत को निर्णायक सैन्य जीत मिली.

उदाहरण 7. करगिल संघर्ष के प्रमुख कारण और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की प्रतिक्रिया पर चर्चा कीजिए.

› सबसे पहले, 1999 के शुरुआती महीनों में, पाकिस्तानी सेना की शह पर 'मुजाहिद्दीन' कहलाने वाले कुछ लोगों ने भारत की नियंत्रण रेखा (LOC) के कई ठिकानों, जैसे द्रास, माश्कोह, काकसर और बतालिक पर कब्ज़ा कर लिया था.

› दूसरा, भारत ने इसे अपनी संप्रभुता पर हमला माना और तुरंत 'ऑपरेशन विजय' शुरू किया, ताकि अपने इलाकों को वापस ले सके.

› तीसरा, यह संघर्ष मई-जून 1999 तक चला और 26 जुलाई तक भारत ने अपने ज़्यादातर ठिकाने वापस हासिल कर लिए थे. इस दिन को हम 'करगिल विजय दिवस' के रूप में मनाते हैं.

› चौथा, इसकी सबसे ख़ास बात ये थी कि इससे ठीक एक साल पहले 1998 में, भारत और पाकिस्तान दोनों ने परमाणु परीक्षण करके अपनी परमाणु क्षमता दिखा दी थी. इसलिए दुनिया को लगा कि कहीं ये परमाणु युद्ध में न बदल जाए.

› और पाँचवाँ, अंतर्राष्ट्रीय समुदाय, खासकर अमेरिका, ने पाकिस्तान पर बहुत दबाव डाला कि वह अपनी सेना और घुसपैठियों को वापस बुलाए, क्योंकि परमाणु हथियारों वाले दो देशों के बीच युद्ध का ख़तरा बहुत बड़ा था. बाद में पाकिस्तान में जनरल परवेज़ मुशर्रफ ने सरकार पर कब्ज़ा कर लिया, जिससे वहाँ बहुत राजनीतिक उथल-पुथल भी हुई.

उत्तर – करगिल संघर्ष का मुख्य कारण पाकिस्तानी घुसपैठ थी, जिसे उसकी सेना का समर्थन प्राप्त था. भारत ने इसका सैन्य जवाब दिया और अपने क्षेत्र को वापस लिया. इस संघर्ष पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय की गहरी चिंता थी, क्योंकि दोनों देश परमाणु शक्ति संपन्न थे, जिससे परमाणु युद्ध का खतरा बढ़ गया था. उन्होंने पाकिस्तान पर दबाव डाला कि वह अपनी सेना और घुसपैठियों को वापस बुलाए.

उदाहरण 8. भारत ने 'परमाणु अप्रसार संधि' (NPT) पर हस्ताक्षर क्यों नहीं किए?

› पहला कदम: हमें समझना होगा कि 'परमाणु अप्रसार संधि' क्या थी। यह एक संधि थी जो कहती थी कि केवल वही देश परमाणु हथियार रख सकते हैं जिन्होंने 1 जनवरी 1967 से पहले परीक्षण कर लिया था (अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन)। बाकी देश परमाणु हथियार नहीं बना सकते।

› दूसरा कदम: अब सोचो, क्या यह संधि सभी देशों के लिए बराबर थी? नहीं ना। कुछ देशों को तो परमाणु हथियार रखने की छूट थी, लेकिन बाकी को नहीं। यह एक तरह का भेदभाव था।

› तीसरा कदम: भारत हमेशा समानता और निष्पक्षता में विश्वास रखता है। भारत का मानना था कि यह संधि भेदभावपूर्ण है क्योंकि यह सिर्फ़ परमाणु शक्तिहीन देशों पर प्रतिबंध लगाती है और परमाणु संपन्न देशों के एकाधिकार को वैध ठहराती है।

› चौथा कदम: इसीलिए, अपनी संप्रभुता और सुरक्षा हितों को देखते हुए, भारत ने इस संधि पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, क्योंकि यह उसे अन्यायपूर्ण लगी।

उत्तर – भारत ने परमाणु अप्रसार संधि (NPT) पर हस्ताक्षर नहीं किए क्योंकि इसे भेदभावपूर्ण माना गया। यह संधि कुछ देशों को परमाणु हथियार रखने की अनुमति देती थी जबकि दूसरों को नहीं, जो भारत की समानता के सिद्धांत के खिलाफ था।

उदाहरण 9. सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत की विदेश नीति में रूस और अमेरिका के साथ संबंधों में क्या प्रमुख परिवर्तन आए?

› पहला कदम: सोवियत संघ के विघटन से पहले भारत का झुकाव सोवियत संघ की तरफ अधिक था, खासकर शीत युद्ध के दौरान। हमारी दोस्ती बहुत गहरी थी।

› दूसरा कदम: 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद रूस का अंतर्राष्ट्रीय महत्व थोड़ा कम हो गया। इससे भारत को अपनी विदेश नीति में संतुलन लाने की ज़रूरत महसूस हुई।

› तीसरा कदम: भारत ने रूस के साथ अपने पुराने और मजबूत संबंधों को बनाए रखा, क्योंकि रूस अभी भी हमारा एक महत्वपूर्ण मित्र है। हमने उससे रक्षा और ऊर्जा के क्षेत्र में सहयोग जारी रखा।

› चौथा कदम: साथ ही, भारत ने अमेरिका के साथ भी अपने संबंधों को मज़बूत करना शुरू किया। व्यापार, तकनीक और रणनीतिक साझेदारी में अमेरिका एक नया और महत्वपूर्ण विकल्प बनकर उभरा।

› पाँचवाँ कदम: यह एक 'संतुलित' नीति थी, जहाँ हमने अपने पुराने दोस्त को नहीं छोड़ा और नए, उभरते हुए शक्ति केंद्र से भी दोस्ती बढ़ाई, ताकि हमारे राष्ट्रीय हित पूरे हों।

उत्तर – सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत ने रूस के साथ पारंपरिक दोस्ती बनाए रखी, जबकि अमेरिका के साथ नए और गहरे संबंध स्थापित करके अपनी विदेश नीति में रणनीतिक संतुलन स्थापित किया।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है कि भारत की शुरुआती विदेश नीति पर अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों का क्या प्रभाव पड़ा।

• यह प्रश्न सीधे-सीधे बोर्ड परीक्षा में 'नेहरू की विदेश नीति के मुख्य उद्देश्य' के रूप में आ सकता है, इसे अच्छे से याद कर लेना!

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. गुटनिरपेक्षता की परिभाषा, इसके कारण, और बांडुंग सम्मेलन पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं. इसके सभी बिंदुओं को ध्यान से पढ़ना.

• यह टॉपिक बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. 1962 के युद्ध के कारण और परिणामों पर अक्सर सीधा सवाल आता है, इसलिए इसे अच्छे से तैयार कर लेना.

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षा के लिए बेहद महत्वपूर्ण है! 1965 और 1971 के युद्ध के कारण, परिणाम, और संबंधित समझौतों जैसे ताशकंद व शिमला समझौते को बहुत अच्छे से याद कर लेना. अक्सर सीधे प्रश्न इन्हीं पर आते हैं.

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। NPT पर भारत का रुख और 'पहले प्रयोग नहीं' (No First Use) की नीति पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। इन बिंदुओं को अच्छे से समझकर जाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें से 'सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत की विदेश नीति में आए बदलाव' पर अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं, इसलिए इसे ध्यान से पढ़ना।

एक नज़र में रिवीज़न

› द्वितीय विश्व युद्ध बाद, शीत युद्ध शुरुआत, नए देशों के उदय से भारत की विदेश नीति प्रभावित हुई।

› नेहरू: PM + विदेश मंत्री; 3 उद्देश्य (संप्रभुता, अखंडता, विकास); गुटनिरपेक्षता.

› भारत ने शीत युद्ध में दो खेमों से दूरी बनाई, एफ्रो-एशियाई एकता से गुटनिरपेक्ष आंदोलन की नींव रखी.

› पंचशील, तिब्बत मुद्दा, सीमा विवाद, 1962 युद्ध: भारत-चीन संबंधों का टर्निंग पॉइंट.

› भारत-पाक संबंध: 1947 कश्मीर, 1965 ताशकंद, 1971 बांग्लादेश, शांति प्रयास.

› भारत की परमाणु नीति: 1940s शुरुआत, 1974/1998 परीक्षण, NPT विरोध, 'पहले प्रयोग नहीं' सिद्धांत।

› 1977+ विदेश नीति बदलाव: गैर-कांग्रेसी सरकारें, सोवियत विघटन, अमेरिका-संबंध, आर्थिक हित।